P.G SEM 2. Paper - V

भारतेन्दुयुगीन काव्य की प्रवृत्तियाँ —

आधुनिक काल के प्रथम चरण को भारतेन्दु युग कहा जाता है क्योंकि यह नामकरण भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के महिमामण्डित व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर किया गया। भारतेन्दुयुगीन कवियों ने अपने कर्तव्य को निर्वाह करने हेतु जनता के सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक पहलुओं का उद्घाटन अपनी कविता में किया। कुल मिलाकर भारतेन्दुयुगीन काव्य की निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ हैं।

(1) देश प्रेम की व्यंजना — अंग्रेजों के दमनचक्र के आतंक से पीड़ित भारतीय में राष्ट्रीयता के भावना का संचार करने का प्रयास भारतेन्दुयुगीन कवियों ने किया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेश से स्वतन्त्रता की प्रार्थना आदि रूपों में भी यह भावना व्यक्त हुई है। देश प्रेम की भावना के कारण इन कवियों ने एक ओर अपने देश की दुर्दशा का वर्णन करते हुए आँसू बहाए हैं तो दूसरी ओर अंग्रेज सरकार की आलोचना करके देशवासियों के मन में स्वराज्य की आपना जगाई —

भीतर-भीतर सब रस चूसै,
हँसि-हँसि के तन-मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज,
क्यों सखि साजन नहीं अंग्रेज।

(2) सामाजिक दुर्दशा का वर्णन — इस युग के साहित्यकारों ने आश्रयदाताओं को संतुष्ट करने के लिए नहीं बल्कि जनता तक अपनी भावना पहुँचाने के लिए काव्य की रचना की। इस काल की रचनाओं

Scanned with CamScanner

में विधवा विवाह, नारी शिक्षा, अस्पृश्यता निवारण आदि की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने वाली रचनाएँ लिखी गयी। सामाजिक रूढ़ियों को दूर करते हुए बाल विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा, छुआ छूत आदि को काव्य का विषय बनाया —

"रोवहु सब मिलि आवहु भारत भाई।
हा! हा भारत दुर्दशा देखी न जाई।"

(3) भक्ति भावना — इस युग में भी भक्ति भावना से भरी कविताएँ लिखी गयी। ईश्वर पर दृढ़ विश्वास व्यक्त करते हुए भारतेंदु जी ने अपनी दीनता का उल्लेख किया है। उनकी भक्तिपरक रचनाओं में भक्ति सर्वस्व, वैशाख महात्म्य, कार्तिक स्नान आदि है। पंडित प्रताप नारायण मिश्र एवं राधाकृष्ण दास के काव्य में भक्तिभावना का वह स्वरूप दिखायी पड़ता है, जो निर्गुण भक्त कवियों में व्याप्त था —

"जो विषया संतन तजी ताहि मूढ़ लपटात।
जो नर डारत वमन करि स्वान स्वाद सों खात।"

(4) शृंगार वर्णन — इस युग के कवियों ने सौंदर्य और प्रेम का वर्णन भी किया है पर इसमें कहीं भी कामुकता नहीं दिखती है। रीतिकालीन पद्धति पर नख-शिख वर्णन एवं नायिका भेद का चित्रण तो किया ही है साथ ही कृष्ण को नायक मानकर तथा राधा को नायिका मानकर उनकी प्रेम लीलाओं का चित्रण भी किया है। भारतेन्दु जी की रचनाओं में प्रेम सरोवर, प्रेम तरंग, प्रेम माधुरी, प्रेम फुलवारी में शृंगार भावना की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। 2

(5) हास्य-व्यंग्य की प्रधानता — भारतेंदु युग के कवियों ने हास्य-व्यंग्यपरक रचनाओं के महत्त्व को

समझते हुए इसके माध्यम से अंग्रेजी शासन, सामाजिक अंधविश्वास एवं रूढ़ियों पर कड़ा व्यंग्य किया है —

"चूरन साहब लोग जो खाता।
सारा हिन्द हजम कर जाता॥"

(6) प्रकृति चित्रण — इन कवियों ने प्रकृति का स्वच्छन्द रूप में चित्रण किया। एक ओर तो वसंत वर्षा आदि का तो दूसरी ओर गंगा, यमुना, चांदनी आदि का सुन्दर चित्रण किया है। भारतेन्दु जी द्वारा किया गया यमुना वर्णन अत्यंत आकर्षक है।

(7) समस्या पूर्ति — इस काल के कवि समस्या पूर्ति के रूप में भी काव्य रचना करते थे। कोई एक पंक्ति या पद्यांश 'समस्या' के रूप में दिया जाता था और कवि विलक्षण कविताएँ करते हुए उस समस्या की पूर्ति हेतु काव्य रचना करते थे।

(8) रस — इस काल में मुख्य रूप से शृंगार, वीर एवं करुण रस की व्यंजना हुई है। यूं तो नौ रस इस काल में मिलता है पर प्रधानता इन्हीं तीनों रसों की है।

(9) भाषा और काव्य रूप — इस काल में प्रायः सरल ब्रजभाषा तथा मुक्तक शैली का प्रयोग किया गया है। इन कवियों ने दोहा, चौपाई, रोला, सवैया, हरिगीतिका, कवित्त जैसे परंपरागत छन्दों में काव्य रचना की है। खड़ी बोली का प्रारंभ इस काल में ही हो चुका था।

सार: कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग का योगदान अविस्मरणीय है।

Scanned with CamScanner